2. कसेरा : एक दस्तकार

(या कारीगर)

शाम का समय है। ठक-ठक-ठक-ठक दूर से ही आवाज़ गूंज रही है। कसेरे मोहल्ले की गली में खड़े हो तो बात करना मुश्किल हो जाता है।

पर ये ठक-ठक की आवाज़ है किसकी? इन 8-10 घरों के सामने बैठ कर कसेरे लोहे और लकड़ी के हथोड़ों से पीतल की चादर पीट रहे हैं। कोई बटलोई (पीतल का घड़ा) का पेंदा मोड़ रहा है, तो कोई ऊपर का भाग। कोई कुड़ा बना रहा है तो कोई बनी हुई बटलोई पर सुन्दरता के लिए मुठार चढ़ा रहा है। इसी से ठक-ठक की आवाज़ सुनाई दे रही है।

दस्तकार कैसे काम करते हैं- चलो यह पता करने के लिए कसेरों के बारे में जानें।

परिवार ने मिलकर घर पर बर्तन बनाए

बंसीलाल और उसका परिवार भी कसेरा मोहल्ले में रहते हैं। बंसीलाल बटलोई, कुड़ा (अनाज का नाप) तपेले (पतीली) आदि बनाता है। उसके साथ उसका भाई और दो लड़के भी काम करते हैं।

घर पर ही बर्तन बनाने का काम सुबह 6 या 6.30 बजे से शुरू हो जाता है। काम की जगह घर के सामने वाले भाग में है। बल्ला-बल्ली, मोगरी, लोनी कई सारे छोटे-छोटे औज़ार लेकर वे अपनी जगह पर बैठ जाते हैं। कठेलना (लोहे का एक गोल सा रिंग) तो वहीं जमीन में गढ़ा हुआ है। बर्तन रखकर ठोकने के लिए छोटे-बड़े सरिए भी जमीन में गढ़े हुए हैं। इन्हीं के पास बैठकर काम होता है। अंगारों की भी दो जगहें हैं जिन पर झलाई (पीतल के दो भागों को जोड़ने) का काम होता है।

बंसीलाल, उसका भाई मन्नूलाल और दोनों बेटे रामेश्वर और अर्जुन चाय पीकर, अपने औजार लेकर

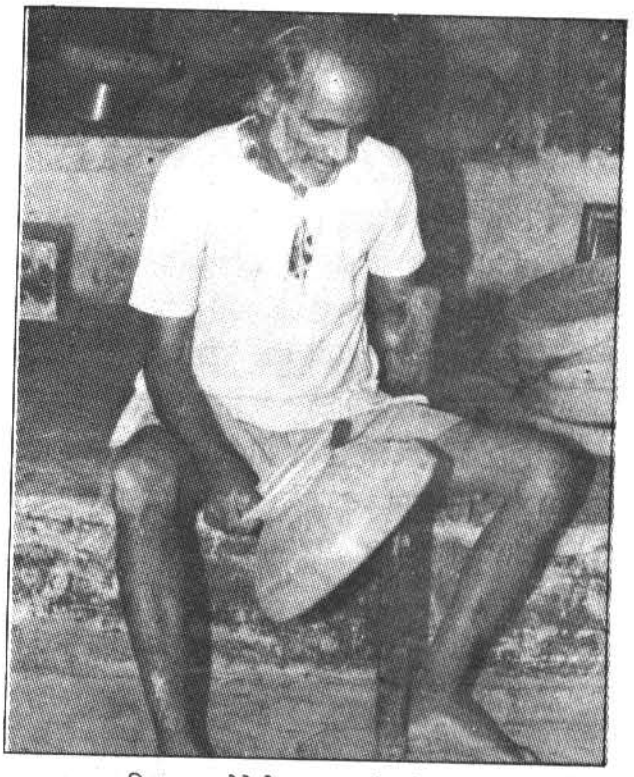

चित्र 1. कसेरे के काम करने की जगह

काम की जगह पर बैठ गए। आज वे लोग बटलोई बना रहे हैं। बटलोई तीन भागों में होती है। नीचे का पेंदा, बीच का भाग और फिर बटलोई का मुंह। तुम्हारे घर पर बटलोई हो तो उसे ध्यान से देखना।

रामेश्वर और अर्जुन बटलोई के पेंदे के भाग को पीट-पीट कर बड़ा कर रहे हैं। यह भाग पीतल की गोल चादर को मशीन से दबाकर बनाया जाता है। बंसीलाल और मन्नूलाल बटलोई के बीच के भाग को ठोंक-ठोंक कर मोड़ रहे हैं। यह भाग पीतल की गोल चादर को ही पीटकर बनाया जाता है।

बंसीलाल, मन्नूलाल और बंसीलाल के दो बेटे मिलकर एक दिन में 8-10 बटलोई के पैंदे और बीच के भाग

पीतल की चादर को ठोंक पीटकर तैयार करते हैं। फिर ऊपर के भाग में एक गोल छेद किया जाता है, जिसमें मुंह बिठाया जाएगा।

बटलोई के मुंह को ध्यान से देखो। क्या यह भी पीतल की चादर को ठोंक पीट कर बनाया गया लगता है? नहीं! बटलोई के मुंह बंसीलाल और मन्नूलाल और उनके जैसे कसेरे नहीं बनाते। ये मुंह पीतल को पिघला कर और ढाल कर बनाए जाते हैं। ढलाई का काम मोहल्ले में केवल एक ही घर में होता है।

अगले दिन झलने का काम होना है। सुबह से ही अंगारे तैयार करने का काम शुरू हुआ। पहले बीच के भाग में जो छेद काटा गया था, उसमें मुंह बिठाकर झाला गया। ये काम मन्नूलाल और बंसीलाल कर रहे थे। दूसरे अंगारे पर रामेश्वर और अर्जुन बैठे थे। उन्हें बंसीलाल और मन्नूलाल बीच का भाग देते जाते (जिसमें मुंह झाला हुआ था) और वे दोनों बीच और नीचे के भाग को आपस में झल देते।

केवल ग़लत वाक्यों को सुधारकर लिखो।

क) बंसीलाल ने काम के लिए मज़दूर रखे।

ख) बंसीलाल उधार से औज़ार लाने के लिए व्यापारी के पास गया।

ग) कसेरा अपने घर पर काम करता है ।

चित्र 2. कसेरे के अपने औज़ार

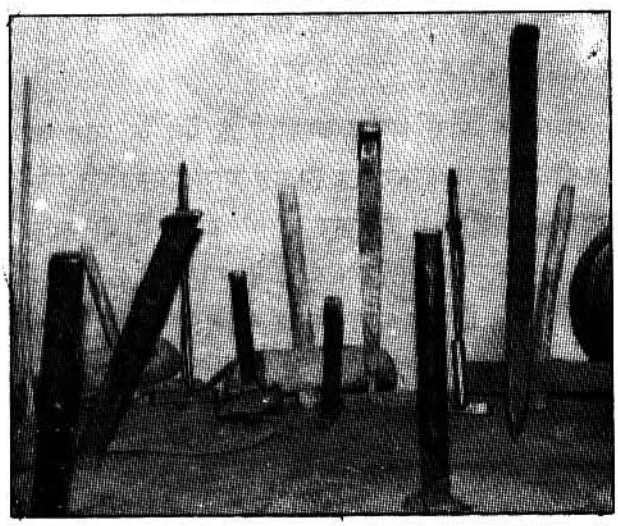

बटलोई के तीन भाग कौन से होते हैं और उन्हें कैसे बनाया जाता है?

बटलोई के तीनों भाग झाल दिए गए हैं। अब बटलोई चमकाई जाएगी। बटलोई को चमकाने के लिए उसे राल से खरात पर चिपका कर घुमाते हैं। खरात के साथ-साथ बटलोई भी घूमती है। बटलोई घूमती जाती है और ये लोग लोनी और चमक के रुंदे से उसकी छिलाई करते हैं। देखते ही देखते बटलोई चमक उठती है।

चाहे पीतल की चादर मोड़ने का काम हो, चाहे झलने का, चाहे चमकाने का- ये लोग सुबह छः बजे से जो लगते हैं रात को नौ बजे से पहले फ़ुरसत नहीं पाते। बस 10-11 बजे भोजन करने के लिए घंटे दो घंटे के लिए काम छोड़ते हैं और थोड़ी देर शाम को नाश्ते के लिए। 40 किलो, यानी 10 बटलोई, वे दो दिन मे तैयार कर लेते हैं।

चित्र 3. बटलोई के बीच का भाग मोड़ते हुए

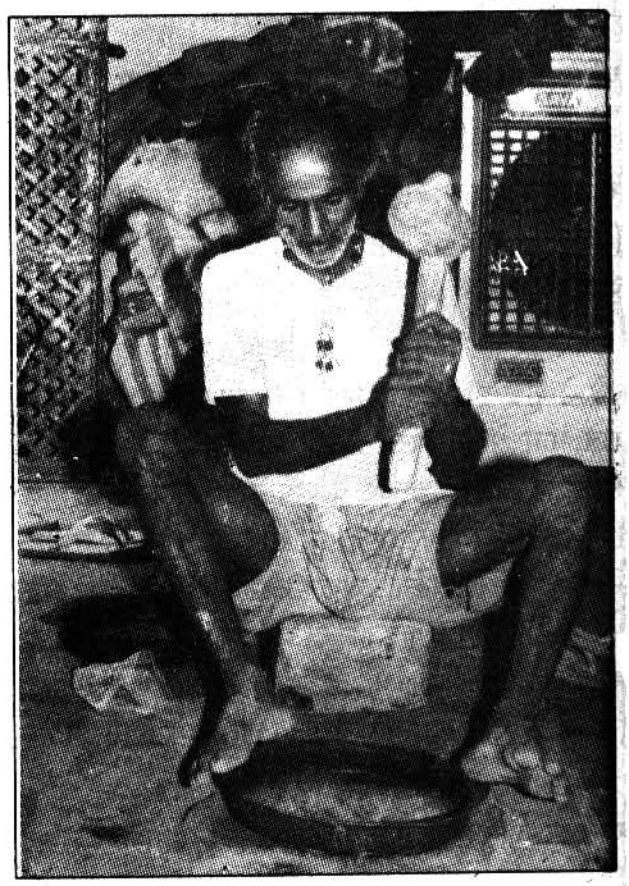

कसेरे के बटलोई बनाने के काम को क्रम से जमाओ

1) बटलोई के पैंदे को झलना

2) पैंदे को तैयार करना

3) बीच के भाग को तैयार करना

4) चमकाना

5) मुंह बिठाकर झलना

बंसीलाल का परिवार बटलोई का एक हिस्सा बनाने के लिए दूसरे परिवार पर निर्भर है। वह कौन सा हिस्सा है?

गुरुजी से चर्चा करो कि 'पिघलाकर ढालने' और 'पीट-पीटकर बड़ा करने' मे क्या अंतर है।

बंसीलाल के भाई ने बर्तन बेचे

8 दिनों में काफी सारा माल तैयार हो गया। बटलोई, कुड़े, तपेले। अब मन्नूलाल सब माल लेकर शहर के एक व्यापारी के यहां गया। व्यापारी ने क्या उससे पूरा माल नगद में खरीदा? नहीं - नए बर्तनों के बदले में कुछ पुराना पीतल दिया और कुछ पैसे दिए। पहले तो उसने हर एक चीज़ तौली-बटलोई अलग, तपेले अलग और कुड़े अलग। जितना पीतल का वजन था उतना ही पुराना पीतल व्यापारी ने तौल कर मन्नूलाल को दिया।

यह पुराना पीतल व्यापारी के पास आया कहां से? जो लोग व्यापारी के पास पीतल के नए बर्तन खरीदने आते हैं, वे घर पर पड़े पुराने टूटे-फूटे पीतल के बर्तन व्यापारी को देते हैं। व्यापारी इस से कुछ कम वज़न के नए पीतल के बर्तन खरीददार को देता है, और बनवाई के पैसे अलग लेता है।

तुम्हारे गाँव या शहर में पीतल के बर्तन बेचने की दुकान हो तो वहाँ जाकर पता करना कि पुराने पीतल के बर्तन के बदले में नया पीतल किस प्रकार बिकता है।

व्यापारी ने तो हर चीज़ अलग-अलग तौली थी। ऐसा क्यों? उसने मन्नूलाल को सिर्फ पुराना पीतल ही नहीं दिया, वस्तु की बनवाई के पैसे भी दिए। बनवाई के पैसे हर वस्तु के लिए अलग-अलग होते हैं।

1994 में कसेरे को मिलने वाले बनवाई के पैसे

वस्तु	बनवाई के पैसे
बटलोई	30 रु. किलो
कुड़ा	35 रु. किलो
तपेला	30 रु. किलो

छोटी-बड़ी बटलोई मिलाकर मन्नूलाल12 बटलोई बेचने ले गया था। कुल वज़न 72 किलो था तो मन्नूलाल को 72 किलो पुराना पीतल और बटलोई की बनवाई 72 X 30 = 2160 रु. मिले। पैसे और पीतल लेकर मन्नूलाल घर पहुंचा। तब उसके घर पर काम चालू था। बंसीलाल और उसके लड़के काम कर रहे थे।

उसने अपने भाई बंसीलाल के साथ बैठकर हिसाब किया। बर्तनों के लिए मिले पैसों में से कुछ रुपये बंसीलाल ने पीतल की नई चादर लेने के लिए अपने पास रख लिए। मन्नूलाल ने 72 किलो का माल बेचा था और 72 किलो पुराना पीतल लेकर आया था। 18 किलो पीतल बटलोई के मुंह ढलवाने के लिए उसने अपने पास रख लिया। बाकी पीतल नई चादरों के लिए बंसीलाल को दिया।

चित्र 4. बीच और नीचे के भाग की झलाई

चित्र 5. बटलोइ को खरात पर चमकाया जा रहा है

व्यापारी के पास पुराना पीतल कहां से आता है?

कसेरे के पास पुराना पीतल कहां से आता है?

कसेरा पुराने पीतल का क्या करता है?

बंसीलाल पीतल की चादरें खरीदने गया

बंसीलाल 2 दिन बाद पीतल की चादर लेने चीचली गया। ट्रक में लादकर अपने साथ पुराना पीतल ले गया। ट्रक वाले को 50 रु. दिए। चीचली में पीतल की गोल चादर बनाने और इन चादरों को दबाकर बटलोई के पैंदे बनाने के कारखाने भी हैं। इन कारखानों में पुराना पीतल लिया जाता है। पैंदे की चादर मशीन से दबा कर गहरी भी की जाती है।

कारखाने के एक शेड में पुराना पीतल तौला जा रहा है। दूर-दूर से कई कसेरे पीतल लेकर आए हैं। जितना भी पीतल तुलता है, उसी वज़न के पीतल की नई चादरें तौल कर कसेरे को दी जाती हैं। चादरें अलग-अलग मोटाई (जिसे गेज कहते हैं) की होती हैं। जिसे जिस मोटाई की चादर चाहिए, वह छांट कर तुलवा लेता है।

पीतल की नई चादर के लिए पुराने पीतल के अलावा कसेरे को कुल 12 रु. प्रति किलो के हिसाब से नई चादर की बनवाई के लिए पैसे भी देने होते हैं। बंसीलाल ने 100 किलो की छोटी-बड़ी चादरें लीं। उसे इन चादरों के लिये 1200 रुपये देने पड़े।

ये चादरें ट्रक पर लदवाकर वह वापस घर पहुँचा। ट्रक वाले को भी 50 रुपये सामान लाने का भाड़ा दिया। इस बीच उसके घर पर उसके लड़के और मन्नूलाल बटलोई, तपेला बनाने का काम कर रहे थे।

पुराना पीतल जो बाकी बचा था, मन्नूलाल ने छगन कसेरे को बटलोई के मुंह ढलवाई के लिए दिया। छगन और उसका भाई लल्लन, मन्नूलाल के घर के सामने रहते हैं और ढलाई का ही काम करते हैं। ये लोग बटलोई, तपेला नहीं बनाते।

इस तरह मन्नूलाल और बंसीलाल के यहां बर्तन बनाने का सामान फिर से इकट्ठा हो गया- पीतल की चादर, बटलोई के पैंदे और बटलोई के मुंह। अब वह इन चीज़ों से नए बर्तन बनाएगा और फिर यह चक्र शुरू होगा: जैसे कि तुम अगले पृष्ठ पर दिए गए चित्र में देख सकते हो।

चित्र मे तीन खाली स्थान हैं। चक्र को समझते हुए इन्हें भरो।

नीचे इस चक्र का वर्णन दिया है। परन्तु इस चक्र में कुछ चीज़ें छूट गई हैं- सही विकल्प चुनकर खाली स्थान में भरो।

(पीतल की चादर, कुड़ा, तपेला, बटलोई, व्यापारी, पीतल के कारखाने, पुराना पीतल, बटलोई के मुंह।)

एक हफ्ते या दस दिन में नए बर्तन तैयार करके मन्नूलाल इन्हें ----- के पास बेचने जाएगा। उसके यहां से वह ---- ------ लाएगा। इसे बंसीलाल ---------- ले जाएगा। वहां से ---------- ले कर आएगा।

मन्नूलाल छगन को पुराना पीतल देकर---------- बनवाएगा। फिर इन सब चीज़ों से बंसीलाल और मन्नूलाल का परिवार ---------- और ---------- बनाएगा।

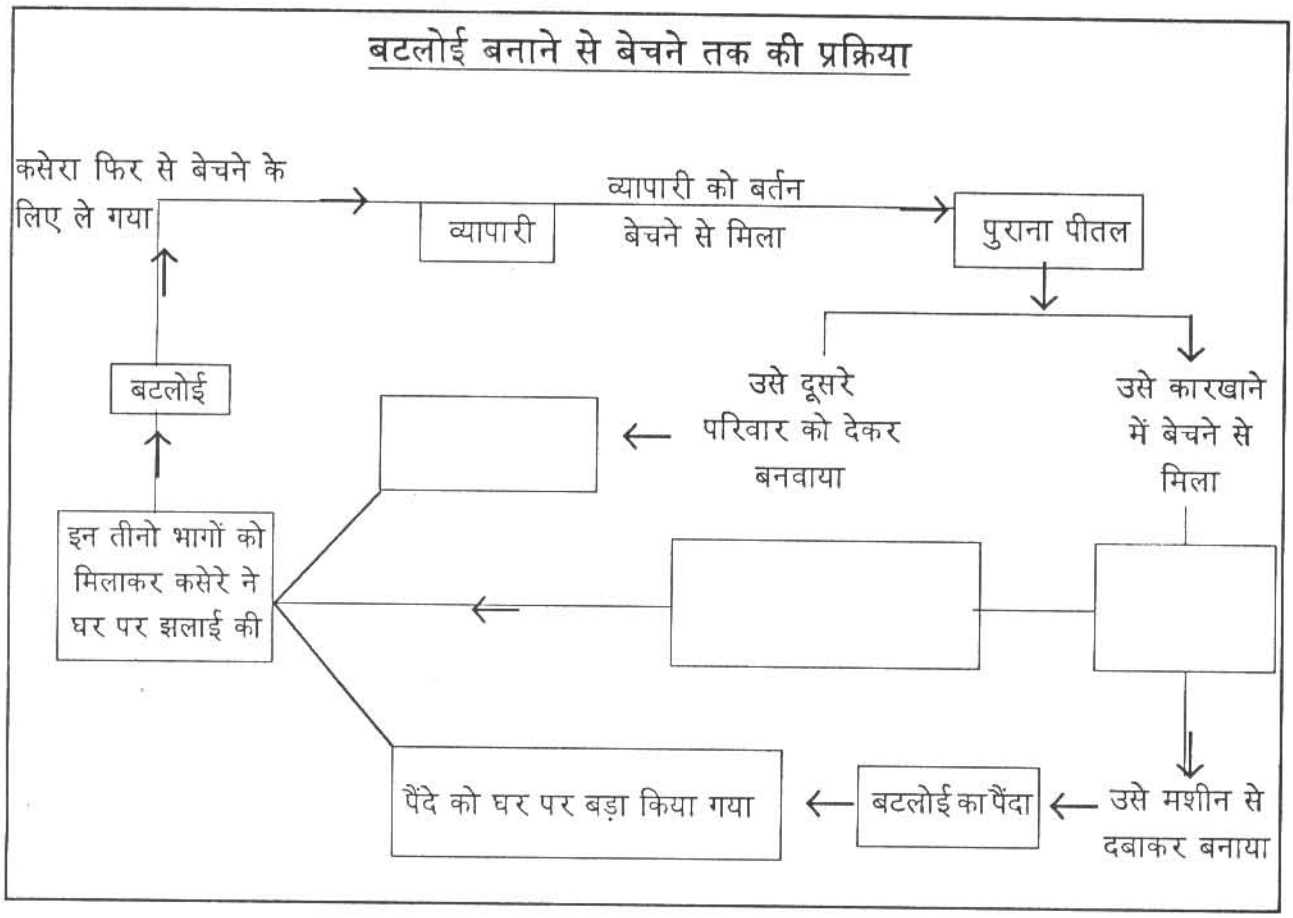

आमदनी और खर्च

तुमने देखा था कि मन्नूलाल और बंसीलाल के परिवार में 4 लोग कसेरे का काम करते हैं। जो बर्तन मन्नूलाल बेचने गया था, वे उसके परिवार ने मिलकर 5 दिन में बनाए थे।

व्यापारी से जो पैसे मिले उन पैसों से बंसीलाल और मन्नूलाल के घर का खर्च चलता है। कभी-कभी कुछ बचत भी हो जाती है। उनके घर पर कुल12 सदस्य हैं।

परन्तु हमेशा कसेरों की आमदनी एक सी नहीं होती है। मन्नूलाल और बंसीलाल का परिवार दो दिनों में करीब 40 किलो पीतल के बर्तन तो बना सकता है, पर हमेशा इतने बर्तन बिकते नहीं है। कभी हफ्ते भर में व्यापारी 100 किलो का माल ही लेता है, तो कभी महीने भर में 200 किलो का। यह बात जुड़ी हुई है खेती से। जब फसल अच्छी होती है तब कसेरों का धंधा भी अच्छा चलता है। फसल खराब होती है तो मंदा पड़ जाता है। इसी तरह शादी और त्यौहार के मौसम में और जब फसल कटती है, तब कसेरों का काम भी बढ़ जाता है।

कौन-कौन से महीनों में कसेरों का काम ज़्यादा होगा और कब कम होगा? आपस में चर्चा करके बताओ।

कसेरे क्यों कम हो गए?

कसेरे मोहल्ले में बात चल रही थी। आज से 50-60 साल पहले मन्नूलाल के कस्बे मे करीब 100 घर कसेरों के थे। रात भर ठक-ठक की आवाज़ से आकाश गूंजता था। अब तो शाम को ही काम बंद हो जाता है। और कसेरों के 7-8 घर ही बचे हैं।

ऐसा क्यों हुआ? मुख्य रूप से स्टील एवं अल्यूमिनियम के बर्तनों का असर कसेरों के धंधे पर पड़ा है। पीतल के

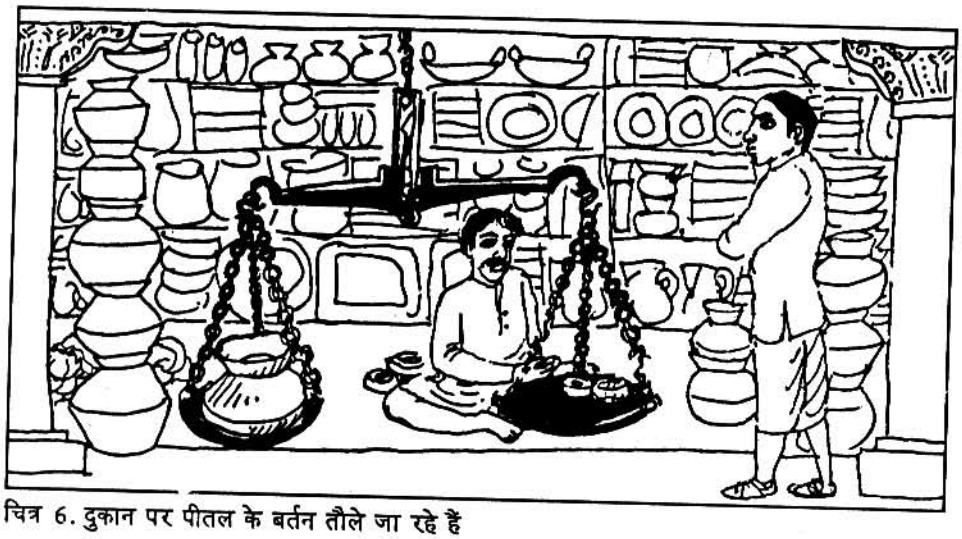

चित्र 6. दुकान पर पीतल के बर्तन तौले जा रहे हैं

बर्तनों को चमकाने और कलई करने में बहुत मेहनत लगती है। स्टील तो फट से साफ हो जाता है। इसलिए लोग अब स्टील के बर्तन ज़्यादा इस्तेमाल करने लगे हैं।

एक और कारण से कसेरे यह काम छोड़ रहे हैं। इसमें मेहनत बहुत लगती है। सुबह से शाम तक बैठ कर पीतल पर हथोड़े मारते रहो, छिलाई करते रहो। थक जाते हैं बहुत। बदन दुखने लगता है। कम शारीरिक मेहनत वाले धंधों में भी तो आजकल पैसा मिल जाता है। कई कसेरों ने यह काम छोड़ कर बर्तन या कपड़ों की दुकान लगा ली है। कई पढ़ लिख कर नौकरी करने लगे हैं।

ये है इन कसेरों की जिन्दगी और काम। घर पर ही सुबह से शाम दिन भर मेहनत करना। स्वयं कच्चा माल लाना और तैयार बर्तन बेचना। इसी माईने में कसेरा एक दस्तकार है।

दस्तकारों के और उदाहरण

कुम्हार नदी पर से मिट्टी लाता है। उसे छानता है, गूंधता है। दो एक दिन में मिट्टी तैयार होती है। जब मिट्टी खत्म होने को होती है तभी वह जाकर और मिट्टी ले आता है।

वह चाक पर मिट्टी को घुमाता है। उसे बढ़ाकर मटके बनाता है। मिट्टी को ऊपर लकड़ी के गुटकों से थपथपाता है, ताकि मटके का रूप बनता जाए। इन मटकों को सुखाकर उन्हें भट्टी में पकाता है। भट्टी के लिए लकड़ी खरीदता है।

मटके बन जाने पर उन्हें स्वयं गांव-गांव ले जाकर या पास के बाज़ार में बेचता है। गर्मी के दिनों में उसका काम बढ़ जाता है और बिक्री भी बढ़ जाती है। कुम्हार भी एक दस्तकार है।

इस प्रकार अन्य दस्तकार हैं - जुलाहा, कपड़े पर छपाई करनेवाला, बसोड़, चर्मकार, रंगरेज़ आदि।

दस्तकार का काम

दस्तकार के काम की कुछ विशेषताएं हैं। पहली बात, वह अपने घर पर काम करता है। वहां उसके अपने औज़ार होते हैं और वह अपना काम करने का समय खुद तय करता है। यानी कोई दूसरा व्यक्ति उसके काम करने का समय तय नहीं करता।

एक शिक्षक, आफिस का बाबू या बैंक कर्मचारी अपने घर पर काम नहीं करते। उनके काम का स्थान अलग है। उसी प्रकार कारखाने में काम करने वाले मज़दूर व अफसर अपना काम कारखाने में ही करते हैं। इनकी तुलना में दस्तकार अपने घर पर ही काम करता है।

इनमें से कौन अपना काम करने का समय खुद तय नहीं करते हैं?

कुम्हार, बसोड़, सरकारी बाबू, शिक्षक, कारखाने का मज़दूर, बैंक मैनेजर।

यह भी बताओ कि इनके काम करने के समय कौन तय करता है?

दस्तकार के काम की दूसरी विशेषता है कि उसके परिवार के लोग मिलकर वह चीज़ बनाते हैं। आमतौर

पर वे मज़दूर नही लगाते है।

दस्तकार के काम की तीसरी विशेषता है कि वह स्वयं कच्चा माल खरीदता है और सामान बनाकर उसे बेचने की व्यवस्था करता है। यानी या तो वह खुद लोगों को बेचता है या फिर किसी व्यापारी द्वारा बेचता है। इनकी तुलना एक दर्ज़ी से करो जो दूसरों को कपड़े सिल कर देता है पर वे कपड़े उसके नहीं होते। यदि कोई दर्ज़ी खुद कपड़ा खरीदकर उसे सिले और फिर उसे बेचे तो वह दस्तकार माना जाएग। आगे के पाठ मे यह अंतर और स्पष्ट हो जाएगा।

अभ्यास के प्रश्न

1. बंसीलाल और मन्नूलाल जैसे कसेरे क्या बनाते हैं? इन चीज़ों का वे क्या करते हैं?
2. उनके काम के लिए कच्चा माल क्या है, ये कच्चा माल वे कैसे प्राप्त करते हैं?
3. कसेरों को अपने माल के बदले में क्या मिलता है?
4. कसेरों के कुछ औज़ारों के नाम बताओ। उनके चित्र भी अपनी कॉपी में बनाओ।
5. कसेरे कहां पर और कब काम करते हैं?
6. धंधा अच्छा चले तो एक हफ्ते में बंसीलाल के परिवार की लगभग कितनी कमाई हो जाती है?
7. कसेरा बटलोइ कैसे बनाता है, समझाओ।
8. कसेरा बटलोइ बनाने के प्रक्रिया मे किन कामों के लिए दूसरों पर निर्भर है? सूची बनाओ
9. व्यापारी को पुराना पीतल कैसे प्राप्त होता है और वह उसका क्या करता है?
10. नीचे कुछ दस्तकारों के बारे मे तालिका दी गई है। इसे पूरा करो।

दस्तकार	क्या बनाता है	कच्चा माल	कच्चा माल कैसे प्राप्त करता है
कुम्हार बसोड़ जुलाहा			

11. पृष्ठ 196 पर कुम्हार के काम के बारे में तुमने पढ़ा। इस के आधार पर कुम्हार के काम को समझाने के लिए एक रेखा-चित्र बनाओ।
12. कसेरे का धंधा क्यों कम हुआ है?
13. क्या ऐसे सभी व्यक्ति जो घर पर उत्पादन करते हैं, उन्हें दस्तकार कहा जाएगा? समझाओ।